

Handwritten text in an ancient script, likely Pahlavi, on a fragment of aged parchment. The text is arranged in approximately seven horizontal lines. A section of the text in the upper right is written in red ink, while the remainder is in black ink. The parchment is heavily worn, with irregular edges and visible staining.

Small handwritten text or a marginal note located on the right edge of the parchment fragment.

सि॥ नमामि २०॥ वासुदेव प्रकृत्यामिमन्ना यो हि
मा॥ ॐ ॥ नृकवर्क स्ववर्क नृकवर्क कथा वस्वर्ग
द्विके नदमय कर्किका॥ ॐ ॥ दध्याकचाल स्वदन
हिमसा नृकके मित्र नृग नापव मृडा कथिता॥
ॐ ॥ मन्त्राव नृकवर्क मित्र नृग नापव मृडा कथिता॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥ वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥ वासुदेवाय नमः

विक्रमि कः शिवा लै कृता ॥ ५२ ॥ सव च व ल न मिः
अ ग क ध लि या २ रु म पि च द्र व रु स व न स द्र पि नि
॥ ५३ ॥ वा ग क रु ॥ ड रु ॥ व पि नि द वि ॥ कि न
य न स द्र लि २ न व को व न वा व न द रु ॥ न मा मि श्य
व पि नि द वि ॥ ५४ ॥ व द्र द्र रु रु ल न रु कि ल मि
नी ला रु का लेः रु रु रु म य नि ॥ स्या मा रु क पी द यि म सा रु भा ष

चतुद विम्वय्या उक्ता जागी सिम्वि ॥ ५२ ॥ एक
वक्ता चतुष्टुका २ वामकया चक्वली मर् २ द कि १५ दम
चूकय सिध्या ॥ ५३ ॥ रुकाय १ रुलकी वक्ता रुकाय
गञ्जनासनकी काव विर्य रुकाय मूको सो ले ॥ ५४
॥ सगमुचवल १५ मिथ मक धाले या २ नयि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वत्सवर्ज वज्राचार्यगीता ॥ ६२ ॥ १३ ॥ वागनाम
क ॥ सा नमस्तुभ्यमा ॥ ६३ ॥ विरहं कावा ॥ आलिका विद्रुः
विवायुयिद्रुका ॥ नमामि निवायव विरव न नाथ
२ वज्रवादि आ विगम अदय ॥ ६४ ॥ कृष्णवर्धन
वुवड न वि नम ॥ वि गव कृ वि स अदय व ड ड क ॥

पुष्प

६५ ॥ डा कि नि वा मा नव तु वा दा वृ पि नि २ व वु द वि
वि द गि वि वा सा ॥ ६६ ॥ सु मि न म द म डा वृ पि
स वि व म व २ न वि अ नू प म व कृ वृ क दा स ॥
६७ ॥ १४ ॥ वागय श्री कृ वि ॥ वं क म दा या वृ स मः
या वा लि कृ वृ खा न २ द म दि म स म व आ वा भि या २

॥ ॐ ॥ सुमया आनन्दकानिदिहोये ॥ ॐ ॥ विद्वि
 यमववयि था न सुल्लमाह निविश्वरुविश्या २७
 ईकावावलिदानुदविदानययि विद्युति वा २७ ॥
 ॐ ॥ मययीसर्ववमा ॥ कालवकु रुवकु कायविश्व
 रुलिया २७ यो गि निम विद्या विश्वरु न नि सुमया
 कययि का मलि शुला ॥ र्गद ला वन ददो ॥ सुय नि हू ना गनाम
 ॥ ह म ॥ मय सुला व न ॥

आनन्दकानिदिहोये ॥ ॐ ॥ सिदना दवा जिया ल
 दम वृषसाद अरु जा गि निदानवस्थ २७ जाले भवय
 अरु वृववयिया ॥ कर्षया वव न र स नि ह ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥ विरा लि ॥ ता ले व क का ॥ विदसे वा वृह दि
 न कल म सुल वा हि क वि सु व न रु न नि २७ क क क ल ड

ॐ ॥

अतिनिनयना २ मात्र च उव गन च उ नि २ द वि क
शिकषा च भया ॥ ॐ ॥ सुखि वा न च सि च माया ॥ क
मल कुलिग दयिता च ॥ वाजयि ना च यि सह क स च य
विद वि ॥ ॐ ॥ चक्रि सि च क ॥ क सु ले क ॥ क
स क स सा २ हा थ वा च क गि या ड स ग व च ल न ना

पू व सु ग नि द वि ॥ ॐ ॥ रा व पु द या न च क क ॐ
च क ॥ दा दि न ह न क या सा २ वा जी ला व वि व दि वि ॥ अ
ॐ न क च ग ग न स च यि नि ॥ ॐ ॥ पु ड म व क य द
सि च ग क धा लि या ॥ ग व क क स क वि सा २ अ न क च
सि दि मा क य दा य नि पु न मा मि श्री व क जा गि नि ॥ द वि

कचप्रिकयात्रधवा॥ ६० ॥ १०॥ वासमधूमन॥ वा
 २ मा॥ ॥ जयवाकुलि वाकुवि॥ हृदयवयनि २ सय
 स्यासववदि कवलने॥ क हृदयमवतिपादकमयम
 हिमदि म नायव लूनरून कावा २ द्वाद मा रुव आवा
 प्रन विरु वि म नायव वृष्ट ड वा वा॥ कि नि कि नि कि

नयनिनयनिनकहुहुना॥ ६२ ॥ कलालिखय
आविबुलुमावरागिवाउरुखिखलीगधुविम
कुकुसि॥ ६३ ॥ श्रीवसिसेधुवधालि॥ विनयव
वमीता॥ कसुलि कपुवुःरुवयिकसाया॥ ६४ ॥ रु
नयिसलतवडुःवाहलिदोस्यश्यनमामिवजुजागी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भो निरुदर वयास ॥ ॐ ॥ गविलसलिवगविस
लिवगविया ॥ नोपवय लुडवा वा शनि नि नि नि
नि नये नि नय नि नत रु रु ना ॥ ॐ ॥ १० ॥ वागवि
सास ॥ नाशिमल्लसाथ ड ध ग ना ॥ ससमनस रु ज स
मानता ॥ ॐ ॥ द वि श्री ग म सि रु ड ध ग ना ॥ २ ग नो मे
विक्रान्तिका गदि सिन पृष्य स जा व रु ग व पृष्य वि धा ॥ आत्मा स्व
मा ना वि य ज ड रु ना ॥ वि गं स व य न वि म लु प्र य ॥

महामय

स्व जमा भ चि न ग ना ॥ ॐ ॥ सर्व रु व म् स्व मा रा व नी
नी रु द दि न रु ल नि व स या व धा लि ॥ ॐ ॥ वा म रु
व्या ग ध रु धा वि ना ॥ २ न व सि य मा व वि व वि ना ॥ ॐ ॥
ग व रु गु ल रु व रु द र्ग नि नि ना ॥ २ रु व म २ रु रु क य
रु लि ना ॥ ॐ ॥ १० ॥ वागवि सास ॥ मल्लस

सयचक्र॥ संसृजसंयुक्त॥ दादसंरुजचउवायिमाय॥
 कु॥ जानरुजवृ॥ श्रीसंमवजागिनि॥ श्रीशंवाचः
 वादविनायानिदवि॥ कु॥ दाकिनिआमायदय
 हावृयिनि॥ वालिमावचववायिवयन॥ कु॥
 कायवाकचिक्तुनिनिदवने॥ दानयत्रियागुरुअ

वगावृ॥ कु॥ आगजागिनिमलिया॥ समवसं
 साव॥ अष्टसमस्यान॥ श्रीद्ववा॥ कु॥ १॥
 वागकन॥ नवटकागिनिदवि॥ प्रिक्तवनेवापिका
 शविद्यमावद्वदयनिनासनि॥ कु॥ नमासिदवि
 श्रीवृजवावादि॥ दिमिदिजायानिऊगगजननि॥

व
 प्र
 ३५

438-II ଗୁପ୍ତାବଳୀ ଓ ପ୍ରାଚୀନ ଗ୍ରନ୍ଥମାନଙ୍କର ତାଲିକା

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ ॥ १८ ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥**
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

इंकार

[illegible]

五

॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

飛

This image shows a fragment of an ancient manuscript, likely from the Voynich manuscript. The text is written in a dark, stylized script on aged, yellowed parchment. The script is dense and characteristic of the Voynich alphabet. The parchment is heavily worn, with significant staining and a large, irregular tear on the left side. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in red ink, possibly indicating a title or a specific section. The overall appearance is that of a well-preserved but damaged historical document.